IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

(छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर के विशेष सन्दर्भ में)

श्रीमती वन्दना धुर्वे, शोधार्थी (अर्थशास्त्र)

डॉ. चन्द्रिका नाथवानी, शोध–निर्देशक (सेवानिवृत्त प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग)

शास. दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगाँव (छ.ग.)

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। शोध पत्र पूर्णतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। पापड़ उद्योग में संलग्न 70 महिला उत्तदाताओं का चयन दैवनिदर्शन के तहत् उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है। उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया है। अध्ययन पश्चात् पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक स्थिति में पूर्व की अपेक्षा सकारात्मक सुधार एवं आय में वृद्धि हुई है। पापड़ निर्माण कर महिलाएँ प्रतिमाह औसतन 5000 से अधिक आय अर्जित कर रही हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उत्तरदाताओं के जीवनशैली पर दिखाई देता है। पापड़ उद्योग के माध्यम से महिलाओं के पारिवारिक वातावरण भी शांतिपूर्ण एवं सौहार्द्रपूर्ण है तथा इनके पाल्यों के शिक्षा एवं परिवार के आय के स्तर में सुधार हुआ है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के आर्थिक व सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन महिलाओं के समक्ष विभिन्न चुनौतियों के कारण ये सुधार अपेक्षा अनुरूप नहीं है, इसमें और सुधार की आवश्यकता है।

शब्दकुंजी : पापड़ उद्योग, कुटीर उद्योग, महिला उद्यामिता, अर्थव्यवस्था, खाद्य वस्तुएँ निर्माण।

प्रस्तावना

वर्तमान सन्दर्भ में देश के युवाओं के समक्ष रोजगार एक महत्वूपर्ण एवं गंभीर समस्या है और इस समस्या के निवारण अथवा समाधान हेतु एक विकल्प के रूप में कुटीर उद्योग को देखा जा रहा है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या एवं रोजगार की कमी सभी विकासशील देशों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, लेकिन बढ़ती जनसंख्या में युवाओं का प्रयोग मानव शक्ति (Man Power) के रूप में कर समस्या को संसाधन में परिवर्तन कर विकास की राह में आगे बढ़ा जा सकता है। आज चीन जैसे सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र विश्व में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में एक नई पहचान के साथ उभरकर सामने आया है, जिसके पीछे केवल सरकार द्वारा जनसंख्या को संसाधन के रूप में परिवर्तन करना है। हमारे देश में भी अब युवाओं में जागरूकता आयी है और वे केवल नौकरी के पीछे न भागकर स्वयं के व्यवसाय को प्राथमिकता दे रहे हैं, इसीलिए केन्द्र व राज्य सरकार भी लघु, सूक्ष्म एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना हेतु इन्हें सहायता प्रदान कर रहे हैं। कुटीर उद्योगों के संवर्धन एवं नये कुटीर उद्योगों के स्थापना के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सहायता से संबंधित कार्यों में कौशल उन्नयन, ब्याज रहित अथवा न्यूनतम ब्याज दर पर आवश्यक मशीनों को लगाने हेतु ऋण

मुहैया करायी जा रही है, जिससे लोगों में कुटीर उद्योग के प्रति रूचि बढ़ी है। यही व्यवस्था अध्ययन क्षेत्र दुर्ग शहर के शासन–प्रशासन द्वारा भी किया गया है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव यहाँ के स्थानीय लोगों पर भी पड़ा है, विशेषकर महिलाओं में इस व्यवसाय के प्रति रूचि एवं जागरूकता बढ़ी है।

आधुनिक जीवन–शैली और बदलते परिवेश के फलस्वरूप लोगों द्वारा अपनाए जाने वाले रोजगार पारम्परिक न होकर स्वयं के रूचि, कार्यक्षमता तथा पारिवारिक आर्थिक परिस्थिति के आधार पर वांछनीय होते जा रहे हैं। वर्तमान में व्यक्ति किसी के अधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वयं के व्यवसाय करने पर अधिक जोर दे रहे हैं। रोजगार साधनों की कमी और कुटीर उद्योग की बढ़ती महत्ता को ध्यान में रखते हुए अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं द्वारा बड़ी संख्या में इस उद्योग के माध्यम से पापड़ निर्माण का कार्य किया जा रहा है। चूंकि न्यूनतम भोजन आवश्यकता से अधिक वर्तमान भोजन–आहार में पापड़ का स्थान पूर्व की अपेक्षा बढ़ते जा रहा है, ऐसे में पापड़ निर्माण एक उद्योग का रूप ले रहा है। हालांकि की बाजार में विभिन्न प्रकार के ब्रांडेड पापड़ की उपलब्धता है लेकिन स्थानीय बाजार में कुटीर उद्योग द्वारा निर्मित पापड़ की मांग अधिक है।

पापड़ उद्योग वर्षभर चलने वाला उद्योग है। हमारे यहाँ दैनिक भोजन से लेकर विशेष पर्वों एवं बड़े कार्यक्रमों, होटलों, रेस्टोरेंट इत्यादि में इसका मांग वर्ष भर बना रहता है। यहाँ महिलाएँ घर से ही बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार के पापड़ का निर्माण करती हैं। दुर्ग शहर में बड़ी संख्या में महिलाएँ पापड़ निर्माण में संलग्न हैं, इसके बाद भी वे अपने उद्योग का पंजीकरण नहीं करा पायी हैं। पंजीकरण के अभाव में इन्हें शासन/प्रशासन की आवश्यक सुविधाएँ नहीं ले पा रही हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में दुर्ग शहर के पापड़ उद्योग में संलग्न महिला उद्यमियों की आर्थिक स्थिति एवं आय के स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

- पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक स्थिति एवं आय के स्तर का अध्ययन करना।
- पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं के आर्थिक विकास के मार्ग में आने वाले बाधाओं/ कठिनाईयों अध्ययन करना।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

पठारे, दत्तात्रेय दौलतराव (2015)[1] ने "Socio-Economic Study of Women Members of Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad with Special Reference to Pune City" में इन्होंने श्री महिला गृह उद्योग (लिज्जत पापड़) में संलग्न महिलाओं का प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया महिलाओं द्वारा पापड़ उद्योग में संलग्न होने से इनके आर्थिक स्थिति में सुधार आया है।

भटनागर, दीप्ति एवं राठौर, अनिमेश (2003)[2] ने "Empowering Women in Urban India: Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad" में इन्होंने अपने शोध अध्ययन में पाया कि इस उद्योग में आने के बाद उनके आर्थिक स्तर में काफी बदलाव आए हैं, जो सकारात्मक पक्ष में है।

रामनाथन, मालथी (2004)[3] ने "Women and Empowerment: Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad" में अपने अध्ययन में पाया कि लिज्जत पापड़ की स्थापना से लेकर वर्तमान तक विकास की स्थिति सुदृढ़ रही है और इसके पीछे महिलाा सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण अवसर के रूप में इसकी भूमिका विचारनीय है। इस उद्योग द्वारा परिकप्ति सशक्तिकरण महिलाओं की कमाई क्षमताओं को बढ़ाने से कहीं अधिक पाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर का चयन किया गया है। दुर्ग शिवनाथ नदी के पूर्वी तट पर बसा हुआ है। दुर्ग जिले के भिलाई प्रक्षेत्र में भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना से इसे एक नयी पहचान मिली और ये दुर्ग–भिलाई ट्विीनसिटी के रूप में जाना जाता है। दुर्ग शहर में जिला एव संभाग मुख्यालय होने से जिले की सभी प्रकार के शासकीय–प्रशासकीय कार्यों सम्पन्न होता है। यह जिले के साथ–साथ संभाग का सबसे बड़ा आर्थिक गतिविधियों वाला स्थान है, अतः यहाँ सभी प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ संपन्न होती है। यह रेलमार्ग एवं सड़क मार्ग से सीधा जुड़ा हुआ है। मुंबई–कोलकाता रेलमार्ग एवं राष्ट्रीय राजमार्ग–53 (गुजरात–महाराष्ट्र–छत्तीसगढ़–उड़ीसा) मुख्य मार्ग पर अवस्थित है।

शोध–प्रविधि

छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में कार्यरत महिलाओं से साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से प्राथमिक आंकड़ों का संकलित किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र पूर्णतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। पापड़ उद्योग में कार्यरत महिलाओं की वास्तविक आंकड़े उपलब्ध नहीं है। दुर्ग शहर में इस उद्योग में कार्यरत महिलाओं की अनुमानित संख्या लगभग 550–600 के मध्य है, जिसमें से 12–15 प्रतिशत उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन प्रविधि के अन्तर्गत् उद्देश्यपूर्ण विधि से कुल 70 महिलाओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

पापड़ निर्माण में कार्य करने की अवधि

किसी भी उद्योग की कार्यावधि अपने सफलता की कहानी स्वयं स्पष्ट करता है। यदि किसी उद्योग से लाभ प्राप्त होता है तो वह लम्बे अवधि तक उसका संचालन किया जाता है। दुर्ग शहर पापड़ निर्माण में संलग्न महिलाओं से उनके पापड़ निर्माण की अवधि को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है (तालिका क्रमाँक–01)।

तालिका क्रमाँक–1

पापड़ निर्माण में कार्य करने अवधि

क्र.	कार्यरत अवधि (वर्ष में)	संख्या	प्रतिशत
1	1 वर्ष से कम	12	17.1
2	2 से 3 वर्ष	16	22.9
3	3 से 5 वर्ष	25	35.7
4	5 वर्ष से अधिक	17	24.3
योग		70	100

तालिका क्रमाँक–1 में दुर्ग शहर के पापड़ उद्योग में संलग्न उत्तरदाताओं में कार्यरत अवधि अर्थात् पापड़ उद्योग में कार्य करने के समय की स्थिति को स्पष्ट करता है। दुर्ग शहर के चयनित उत्तरदाताओं द्वारा पापड़ उद्योग में 1 वर्ष से कम समय से कार्यरत महिलाओं की संख्या 12 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या 17.1 प्रतिशत है। 2 से 3 वर्ष से पापड़ उद्योग में कार्यरत महिलाओं की संख्या 16 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 22.9 प्रतिशत है। 3 से 5 वर्ष से पापड़ उद्योग में कार्यरत महिलाओं की संख्या 25 है, जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 35.7 प्रतिशत है। 5 वर्ष से अधिक समय से इस उद्योग में कार्यरत महिलाओं की संख्या 17 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 24.3 प्रतिशत है।

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि दुर्ग शहर में अधिकांश न्यादर्श उत्तरदाता लम्बे समय से इस उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही नये महिला उद्यमियों द्वारा भी उस कार्य को अपनाया गया है। उत्तरदाताओं से साक्षात्कार के दौरान विचार–विमर्श से स्पष्ट हुआ है कि कोरोना काल के बाद इस कार्य में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है, क्योंकि कोविड–19 दौरान आर्थिक गतिविधियों के प्रभावित होने से लोगों को कार्य मिलने में कठिनाई हुई। साथ ही बड़ी संख्या में बेरोजगार भी हुए इसलिए आर्थिक तंगी व परिवार के भरण–पोषण की कमी को दूर करने हेतु महिलाओं ने पापड़ निर्माण के कार्य को अपने आजीविका के रूप में अपनाया है तथा अपने और अपने परिवार के आय वृद्धि में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

पापड़ बनाने की विधि

पापड़ निर्माण की विधि से पापड़ निर्माण में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति एवं कार्य करने की प्रक्रिया को ज्ञात किया जा सकता है। प्रारंभिक रूप में पापड़ निर्माण का कार्य पूर्णतः हाथों से ही किया जाता था, लेकिन समय व तकनीकों में परिवर्तन होने से पापड़ निर्माण हेतु विभिन्न प्रकार के आधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जाने लगा है। पापड़ निर्माण की प्रक्रिया से उत्तरदाताओं द्वारा पापड़ उत्पादन की मात्रा एवं आय निर्धारित होता है, जितना अधिक पापड़ निर्माण करते हैं उन्हें उतनी ही अधिक आय प्राप्त होती है।

तालिका क्रमाँक–2

उत्तरदाताओं द्वारा पापड़ बनाने की विधि

क्र.	पापड़ बनाने की विधि	संख्या	प्रतिशत
1	पूर्णतः हाथ से	19	27.1
2	पूर्णतः मशीन से	35	50.0
3	दोनों से	16	22.9
योग		70	100

तालिका क्रमाँक–2 दुर्ग शहर के पापड़ उद्योग में संलग्न उत्तरदाताओं पापड़ बनाने की पद्धतियों/विधियों की स्थिति को स्पष्ट करता है। तालिका से स्पष्ट है कि दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में संलग्न उत्तरदाताओं द्वारा पूर्णतः हाथ से पापड़ निर्माण करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 19 है, जो कि कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 27.1 प्रतिशत है। पूर्णतः मशीन की सहायता से पापड़ बनाने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 35 है, जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या 50.0 प्रतिशत है। दोनों विधियों अर्थात् मशीनों एवं हाथ से पापड़ बनाने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 16 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 22.9 प्रतिशत है। इस प्रकार कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या 70 है।

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि अध्ययन क्षेत्र में दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में कार्यरत महिलाओं द्वारा एक ओर पारम्परिक तरीके अर्थात् पूर्णतः हाथ से पापड़ निर्माण किया जाता है, जबकि दूसरी ओर महिलाओं द्वारा पूर्णतः मशीनों की सहायता से पापड़ का निर्माण किया जाता है। पापड़ निर्माण कार्य से पापड़ उद्योग में कार्यरत महिलाओं में बड़ी संख्या में पापड़ निर्माण हेतु मशीनों का प्रयोग किया जाता है, मशीनों के प्रयोग से वे प्रतिदिन औसतन अधिक (पूर्णतः हाथों से पापड़ बनाने वालों की अपेक्षा) उत्पादन करते हैं।

पापड़ निर्माण से प्रतिमाह औसत आय

किसी भी कार्य का निर्माण अथवा उत्पादन आय प्राप्ति की स्थिति को निर्धारित करता है। ठीक उसी प्रकार दुर्ग शहर में पापड़ निर्माण में संलग्न महिलाओं द्वारा भिन्न–भिन्न मात्रा में पापड़ का उत्पादन कार्य किया जा रहा है और महिलाओं को उत्पादन के अनुसार ही आय प्राप्त हो रहा है।

तालिका क्रमाँक–3

पापड़ निर्माण से प्रति माह औसत आय

क्र.	औसत आय (रूपये में)	संख्या	प्रतिशत
1	1500 से कम	8	11.4
2	1500 – 3000	19	27.1
3	3000 – 4500	23	32.9
4	4500 – 6000	14	20.0
5	6000 से अधिक	6	8.6
योग		70	100

तालिका क्रमाँक–3 दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं द्वारा पापड़ निर्माण एवं विक्रय से प्राप्त होने वाले प्रति माह औसत आय की स्थिति को दर्शाता है। दुर्ग शहर में महिलाओं द्वारा पापड़ निर्माण से 3000 से 4500 रूपये प्रतिमाह औसत आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 23 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 32.9 प्रतिशत है। 1500 से 3000 रूपये प्रतिमाह औसत आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 19 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 27.1 प्रतिशत है। 4500 से 6000 रूपये प्रतिमाह औसत आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 14 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 20.0 प्रतिशत है। 1500 रूपये से कम प्रतिमाह औसत आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 8 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 11.4 प्रतिशत है। 6000 रूपये से अधिक प्रतिमाह औसत आय प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 6 है जो कुल न्यादर्श उत्तरदाताओं की संख्या का 8.6 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट होता है कि दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं द्वारा पापड़ निर्माण से अपने परिवार के आय में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। महिलाएँ न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं, साथ ही इनके परिवार के जीवन–यापन का स्तर में सुधार हुआ है।

समस्याएँ

दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं के समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएँ/चुनौतियाँ है, जिसके कारण पापड़ उद्योग का विकास प्रभावित हो रहा है–

1. पापड़ उद्योग को प्रारंभ करने हेतु आवश्यक वित्त/ऋण संबंधी समस्या है, वहीं दूसरी ओर शासकीय योजनाओं का लाभ प्राप्ति हेतु अनेक कसौटियाँ है, जिसके कारण उत्तरदाताओं को शासकीय योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में कठिनाई होना।
2. अन्य ब्राण्ड के पापड़ उत्पादों की अपेक्षा स्थानीय पापड़ की मांग एवं खपत का कम होना।
3. उत्पादन लागत की अपेक्षा लाभ का प्रतिशत कम होना, उत्पादन, विक्रय तथा पैकिंग संबंधी प्रशिक्षण की कमी एवं आवश्यक साधनों का अभाव।
4. महिलाओं में शिक्षा एवं प्रशिक्षण की कमी है, जिसके कारण उपरोक्त सभी दशाएँ और भी हावी हो जाती है।

सुझाव

अध्ययन क्षेत्र में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं के उत्थान एवं उद्योग के विकास हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत है–

1. पापड़ उद्योग को प्रारंभ करने हेतु आवश्यक वित्त/ऋण की सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए और शासकीय योजनाओं की प्राप्ति हेतु पात्रता की शर्तों को सरल बनाना चाहिए ताकि सभी उद्यमियों को शासकीय योजनाओं का लाभ प्राप्त हो और वे अन्यत्र अधिक ब्याज पर ऋण लेने से बचे।
2. स्थानीय बाजारों में मांग व खपत को बढ़ाने हेतु महिलाओं को प्रशिक्षण एवं आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराना चाहिए।
3. अन्य पापड़ उत्पादों की तुलना में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु सहयोग व नवीन तकनीकों के प्रयोग हेतु प्रशिक्षण एवं आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध करायी जानी चाहिए, ताकि उत्पादन लागत में कमी एवं लाभ के प्रतिशत को बढ़ाया जा सके।
4. स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं को संबंधित कार्य हेतु शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए, ताकि महिलाओं में कार्य के प्रति उत्सुक्ता एवं जागरूकता बनी रहे।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है, कि दुर्ग शहर में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत निम्न है। इनके आर्थिक स्थिति के उत्थान हेतु शासन/प्रशासन को और अधिक प्रयास एवं महिलाओं में अपने कार्य के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है,। स्थानीय बाजार के मांगों के अनुरूप उत्पादन एवं विपणन की स्थिति को समझकर कार्य किया जा सके। पापड़ निर्माण हेतु नवीन तकनीकों/मशीनों के संचालन हेतु प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर उत्पादन लागत में कमी करके इनके आय के स्तर में बढ़ोत्तरी की जा सकती है। लाभ के प्रतिशत में वृद्धि के साथ ही महिलाओं की आर्थिक स्थिति स्वतः ही ऊपर उठने लगेंगी, जिससे इनके परिवार का आर्थिक वृद्धि होगी जिससे इन्हें अपने मूलभूत आवश्यताओं की पूर्ति हेतु निर्भरता कम होगी और महिलाओं में आत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान में वृद्धि होगी। अंततः यह आवश्यक है, कि अध्ययन क्षेत्र में पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं में पापड़ निर्माण से संबंधित योजनाओं, स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सुदृढ़ संचालन की आवश्यकता है।

सन्दर्भ–सूची

1. पठारे, दत्तात्रेय दौलतराव (2015) "Socio-Economic Study of Women Members of Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad with Special Reference to Pune City" अप्रकाशित शोध ग्रंथ, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे, महाराष्ट्र।

2. भटनागर, दीप्ति एवं राठौर, अनिमेश (2003) ने "Empowering Women in Urban India: Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad" https://www.academia.edu/33217415/Empowering_women_in_urban_India_Shri_Mahila_Griha_Udyog_Lijjat_Papad

3. Ramanathan, Malathi (2004) "Women and Empowerment: Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad" Economic and Political Weekly, Vol. 39, No. 17 (Apr. 24-30, 2004), pp. 1689-1697

4. Ramanathan, Malathi, "Grassroots Developments in Women's Empowerment in India: Case Study of Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad (1959–2000)."
URL: http://www.pcr.uu.se/myrdal/pdf/Malathi_Ramanathan.pdf

5. https://www.durg.gov.in